ISSN: 0973-0583

विद्यालयी बालकों पर समुदाय का प्रभाव

कुमार सुरेन्द्र प्रताप

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, सांई नाथ विश्वविद्यालय, रॉची, झारखण्ड (भारत)

डॉ0 शीला सिंह

अनुसंधान पर्यवेक्षक, शिक्षा विभाग, सांई नाथ विश्वविद्यालय, रॉची, झारखण्ड

शोध सार

मानव की प्रकृति को अगर अवलोकन किया जाय तो प्रतीत होता है कि वह व्यक्तिगत होने के साथ-साथ सामाजिक भी होते हैं। मानव की व्यक्तिगत प्रकृति ही उन्हें स्वतंत्र रुप से आत्म प्रदर्शन एवं विकास करने का अधिकार प्रदान करता है। समुदाय अंग्रेजी शब्द कम्युनिटी का हिन्दी रुपांतरण है। शब्द विचार की दृष्टिकोण से कम्युनिटी शब्द लैटिन भाषा के दो शब्द COM और MUNIS से निर्मित है। Com का अर्थ होता है 'साथ-साथ अथवा एक साथ मिलकर' जबकि MUNIS शब्द का अर्थ ' सेवा करना होता है'। अत: हम कह सकते हैं कि एक साथ मिलकर सेवा करने की प्रवृत्ति का विकास एक निश्चित भू-भाग में रहने से ही संभव हो पाया है। समुदाय मनुष्यों का स्थाई और स्थानीय समूह है जहाँ कहीं भी व्यक्तियों का एक समूह समान्य जीवन में भाग लेता है जिसे हम समुदाय कहते है। अत: इस आलेख के माध्यम से समुदाय के विस्तृत और व्यापक अर्थ को विस्तार से बताने का प्रयास किया गया है। समुदाय के आधार, आकार, तत्व, समुदाय का बालकों पर शैक्षिक प्रभाव एवं समुदाय के शैक्षिक कार्य आदि के विषय में भी यह आलेख विस्तृत जानकारी प्रदान करता है।

शब्द कुंजी: कम्युनिटी, सामाजिक, भू-भाग, शैक्षिक प्रभाव, शैक्षिक कार्य, समूह

परिचय:

शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरणों में समुदाय का स्थान श्रेष्ठतम एवं महत्वपूर्ण है । अंग्रजी भाषा में समुदाय को कम्युनिटी कहते हैं जो शब्द विचार के दृष्टिकोण से लैटिन भाषा के दो शब्दों Com और Munis से बना है जिसका अर्थ क्रमश: एक साथ (together) और सेवा करना होता है। इस प्रकार से इंगित होता है कि समुदाय का अर्थ है एक साथ मिलकर सेवा करना। समुदाय में व्यक्ति एक साथ मिलकर अपने अधिकारों का उपयोग करते हैं। समुदाय में व्यक्तियों की संख्या का बहुत अधिक महत्व नही होता। दो अथवा दो से अधिक कितने भी व्यक्ति समुदाय का निर्माण कर सकते हैं। भौगोलिक क्षेत्र होना तो चाहिए किंतु यह बड़ा या छोटा हो सकता है। समुदाय में मुख्य बात आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक लक्ष्यों की समानता है न कि व्यक्तियों की संख्या या क्षेत्र की सीमा।

अत: सरल एवं समान्य शब्दों में समुदाय के परिभाषिक रूप-रेखा को देखा जाय तो प्रतीत होता है कि समुदाय दो अथवा दो से अधिक व्यक्तियों का ऐसा समूह जो एकता अथवा सामुदायिक भावना के उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप बनता है, जिसमें निश्चित भौगौलिक क्षेत्र, सामुदायिक भावना, समान्य जीवन तथा नियमों आदि तत्वों का होना आवश्यक होता है। जहॉ तक सामुदायिक क्षेत्र आकार से संबंधित है तो यह स्वाभाविक तौर पर देखा जाता है कि समुदाय का क्षेत्र बड़े से बड़े अथवा छोटे से छोटे हो सकते हैं। समान्य तौर पर सामुदाय का क्षेत्र आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समानताओं पर निर्भर होता है। समुदाय को कुछ नामचीन शिक्षाविदों द्वारा निम्नलिखित अर्थो में परिभाषित किया गया है :-

1. किसी सीमित क्षेत्र के अन्तर्गत सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण संगठनों को समुदाय समझा जा सकता है ।

   .... आंगनबर्न तथा निमकॉफ

2. समुदाय सबसे छोटा ऐसा क्षेत्रिय समूह है जिसके अन्तर्गत सामाजिक जीवन के समस्त पहलू आ सकते हैं।

   ....डेविस

3. एक भगौलिक क्षेत्र के अन्तर्गत मानवीय सम्बंधों का एक निश्चित रुप अर्थात व्यक्ति, संस्कृति एवं भूमि का समन्वित रूप समुदाय है।

....कुक

उपर्युक्त परिभाषाओं पर ध्यानाकर्षण के बाद अवलोकित होता है कि समुदाय और सामुदायिक विकास की विभिन्न परिभाषाएँ स्पस्ट करता है कि समुदाय निश्चित भू-भाग, उसमें रहने वाले लोगों, उनकी सामुदायिक भावना, आचार-विचार, रहन-सहन एवं व्यवहार में समानताएँ, स्थान विशेष का स्थायित्व, सहयोग एवं प्रयत्न से संबंधित होता है तथा वहाँ की जनता के स्वयं के प्रयास एवं जीवकोपार्जन में विशिष्ट परिवर्तन ही सामुदायिक विकास है। समुदाय की एक लोकप्रिय एवं प्रचलित पारिभाषिक अर्थ के अनुसार समुदाय एक स्थानीय समूह है जिसमें व्यक्ति जीवन के सभी कार्य व्यवहार करते हैं। अत: विस्तृत अर्थ में समुदाय में निम्न तत्व शामिल है:-

1. व्यक्तियों का समूह ।
2. एक भौगोलिक सीमा के अन्दर।
3. विशेष और अन्योन्याश्रय कार्यो के लिए श्रम का विभाजन ।
4. एक सामान्य संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था जो उनमें रह रहे व्यक्तियों की क्रियाओं को संचालित करते हैं।
5. जिसके सदस्य अपने एकता और समुदाय से अपने लगाव के प्रति सचेत है। समाजशास्त्र में समुदाय का अध्ययन करने वाली पहली कोशिश आर0 एम0 मैकाईवर ने की थी और उन्हीं के विश्लेषण को हम अपना आधार मानते है। एक समाजशास्त्री मेनहैम जिन्होंने समुदाय के विषय में कहाँ है कि समुदाय एक साथ रहने वाले ऐसे व्यक्तियों का वृत है जो पारस्परिक संबंध बनाते समय न केवल अपने किसी एक यादों विशेष बल्कि सभी हितों की भागीदारी करते है।

समुदाय के आधार एवं आधारभूत कसौटी

समुदाय के आधारभूत कसौटी के अनुसार हम कह सकते हैं कि समुदाय में सभी तरह के सामाजिक संबंधों को देखा जा सकता है। सभी समुदाय आत्मनिर्भर नही होते। कुछ समुदाय अपने आप में पूर्ण और दुसरों से बिल्कुल स्वतंत्र होते है। उदाहरण के तौर पर कैलिफोर्निया के योरोक जाति के लोग लगभग एकांकी जीवन जीते थे लेकिन आधुनिक समुदाय यहाँ तक कि वे भी जो बहुत बड़े है, कम से कम वो स्वत: पूर्ण है। आर्थिक और राजनैतिक अंतर निर्भरता हमारे आधुनिक समुदायों की सबसे बड़ी विशेषता है।

एक महान समाजशास्त्री मैकाईवर की विचारधारा पर अगर दृष्टिपात करें तो प्रतित होता है कि उनके अनुसार स्थान और समूह भावना को समुदाय का आधार माना जा सकता है। हर समुदाय का कोई स्थान या क्षेत्र अवश्य होता है। यहाँ तक कि घुम्मकड़ समुदाय का भी एक अपना मुकाम होता है। हॉलाकि वे लोग अपना निवास स्थान समय-समय पर बदलते रहते हैं। जो लोग इस समुदाय से संबंधित होते हैं वे लोग दुनियॉ भर में घुम-घुम कर अपना जीवन-यापन करते है। समुदाय की परिकल्पना का महत्व सामाजिक संबद्वता और भगौलिक क्षेत्र के बीच बड़े पैमाने पर बनते है। उदाहरण के तौर पर फ्रांस का अर्धा निर्जन क्यूबेक समुदाय। जैसा कि हम देखते है कि समुदायिक भावना समुदाय के अस्तित्व की प्राथमिक जरुरत है। आज का समाज वह देख रहा है जो आदिम समाज में कभी नहीं हुआ। लोग ऐसे स्थान में निवास कर रहे हैं जहाँ सामुदायिक चरित्र की मूल आवश्यकता अर्थात सामाजिक सुसंगति का अभाव है। अत: हम समुदाय के आधार के सम्बंध में कह सकते हैं कि केवल स्थान जो एक समुदाय का अनिवार्य तत्व है उसके आधार पर समुदाय की रचना असंभव है। अत: समुदाय का अर्थ सामुदायिक जीवन का एक स्थान है। समुदाय में जीवन जीने का आम तरीका और रहने का आम स्थान का होना अतिआवश्यक है। तभी हम अच्छे समुदाय की कल्पना कर सकते हैं।

समुदाय का आकार

वैसे तो समुदाय के आकार को निर्धारित करना काफी मुश्किल कार्य है। फिर भी कहा जा सकता है कि समुदाय का आकार बहुत बड़े से बड़े और छोटे से छोटे भी रह सकते है। अगर बड़े से बड़े समुदाय की बात की जाए तो उसमें एक देश को समुदाय की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि किसी विशेष देश की संस्कृति एवं सभ्यता उसी देश के लोगो की एक भाषा एवं संस्कृति होती है जो उस राष्ट्र की विशेषता के अनुसार निर्धारित

होती है। समुदाय के और भी बृहत स्वरूप के रुप मे हम विश्व को भी देख सकते हैं। यदि एक दुसरे देश की सामाजिक, आर्थिक दूरी को कम कर दिया जाए। चूकि विश्व का भी अपना एक सुनिश्चित भू-भाग होता है और उनके लोगो में आपसी तालमेल भी। अत: विश्व का सामाजिक आर्थिक विकास विश्व के सदस्यों पर निर्भर होता है ।

छोटे से छोटे समुदाय के लिए भी हमारे सामने कई उदाहरण मौजूद है जैसे राष्ट्र से छोटा कोई एक प्रांत जिसका एक निश्चित क्षेत्र होता है साथ ही राज्य वासियों की समाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं में एकता भी होता है। सभी नागरिक परस्पर एक दुसरे पर निर्भर होते है तथा प्रांतीय जिम्मेदारियाँ एवं कर्तव्य के प्रति जागरुक भी रहते है। इस प्रकार से हम पाते है कि एक प्रांत के अन्तर्गत ग्रामीण और शहरी समुदाय को देख सकते हैं। समान्यत: गाँव को समुदाय का एक उपयुक्त एवं अनुठा उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है।

विद्यालयी बालकों पर समुदाय के शैक्षिक प्रभाव:

प्रत्येक समुदाय बालकों के अपेक्षित विकास के पहलुओं को औपचारिक एवं औपचारिक रूप से प्रभावित करते हैं जिसे हम निम्न प्रकार से श्रेणीबद्व कर सकते हैं :-

1. शारीरिक विकास पर प्रभाव:- वैसे तो बालक के शारीरिक विकास पर परिवार तथा स्कूल आदि संस्थाओं का भी गहरा प्रभाव होता है परन्तु इस सम्बंध में वातावरण का प्रभाव भी अपने भूमिका की सकारात्मक एवं अमिट छाप छोड़ने में पीछे नहीं दिखते हैं। समुदाय स्थानीय संस्थानों का निर्माण करता है। ये संस्थाएँ गॉवों तथा नगरों के मोहल्ले एवं गली कूची में सफाई का प्रबंध करती है और जगह-जगह पर बागों एवं पार्को की व्यवस्था करती है। स्वच्छ वातावरण में रहने वाले बालकों में स्वच्छ वातावरण में रहने की आदत विकसित हो जाती है। साथ ही बाग बगीचे और पार्क जैसे खुले वातावरण में भाग-दौड़ तथा घुमना-फिरना बालकों को स्वच्छ हवा एवं प्राणवायु प्रदान करते है। फलत: स्वच्छ वातावरण एवं बगीचे और पार्क से प्राप्त वायु बालकों के स्वास्थ्य को सबल एवं निरोग काया प्रदान करती है जो बालकों के शारीरिक विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। अत: संक्षिप्त में कहा जाना समीचीन होगा कि स्थानीय संस्था द्वारा व्यवस्थित किये हुए विभिन्न साफ-सफाई स्वस्थ एवं रमणीक स्थानों तथा विभिन्न स्वास्थ संबंधी संस्थानों के द्वारा बालकों के स्वास्थ एवं शारीरिक विकास पर सकारात्मक प्रभाव डालते है।

2. मानसिक विकास पर प्रभाव:- बालकों के मानसिक विकास के मद्देनजर समुदाय द्वारा जगह-जगह पर पुस्तकालयों की व्यवस्था की जाती है जो बालकों के ज्ञानवर्द्धन में अथक योग निभाते है। साथ ही समुदाय समय-समय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता, कवि सम्मेलनों तथा विभिन्न प्रकार के गोष्ठियों की भी व्यवस्था करता है। अत: इन सभी उत्कृष्ट गतिविधियों से बालको के मनोरंजन तो होते ही है साथ ही मानसिक विकास भी।

3. सामाजिक विकास पर प्रभाव:- समुदाय में समय-समय पर सामाजिक सम्मेलन, मेले, उत्सव एवं धार्मिक कार्य होते रहते हैं जिसमें बालक प्रसन्नता पूर्वक भाग लेते हुए समुदाय के विभिन्न सदस्यों से संपर्क भी स्थापित करते हैं। अत: सुस्पष्टत: कहा जा सकता है कि इन्हीं सब गतिविधियों में भाग लेने तथा मिल-जुल कर कार्य करने से बालकों में सामाजिकता की भावना विकसित हो जाते है। फलत: इसी विकसित समाजिकता के कारण बालकों में सामाजिक रीति-रिवाजों, परंपराओं, मान्यताओं तथा विश्वासों एवं आदशों का ज्ञान भी प्राप्त हो जाते है जो आगे चलकर बालकों में सहानुभूति, सहयोग, सहनशीलता, समाज सेवा एवं त्याग आदि अनेक सामाजिक गुण विकसित करते है। इतना ही नही, अपितु सामुदायिक वातावरण में रहते हुए उसे कर्तव्यों और अधिकारों तथा स्वतंत्रता एवं अनुशासन का भी वास्तविक अर्थ का भी ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार से बालकों को अवगत हो जाता है कि अधिकार के साथ कर्तव्य तथा स्वतंत्रता के साथ अनुशासन का होना परमावश्यक है। अत: निष्कर्षत: कहना श्रेयकर होगा कि सामाजिक विकास पर समुदाय का गहरा एवं अमिट प्रभाव पड़ता है।

4. सांस्कृतिक विकास पर प्रभाव:- प्रत्येक समुदाय की अपनी निजी संस्कृति होती है। इसी संस्कृति की छाप समुदाय के प्रत्येक सदस्यों पर दृष्टिगोचर होती है। बालक जब कभी संस्कृति तथा धार्मिक उत्सवों मे भाग लेता है और कभी-कभी अपने बड़ों द्वारा संस्कृति की आदर एवं संरक्षण होते देख वह अनजाने में ही उस समुदाय की

संस्कृति को अनुकरण द्वारा अपना लेता है। यही कारण है कि बालक समुदाय के बोल-चाल, भाषा तथा आचरण को अपना लेता है। इसी छाप के अंतर को शहरी तथा ग्रामीण समुदायों के बालकों में स्पस्ट रुप से देखा जा सकता है। अत: निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि बालक के सांस्कृतिक विकास पर समुदाय अपनी अमिट छाप छोड़ती है।

5. चारित्रिक तथा नैतिक विकास पर प्रभाव:- वैसे तो शिक्षा का उद्देश्य ही है कि बालकों में चारित्रिक एवं नैतिक विकास सबसे प्रमुख लक्ष्य हो, परन्तु समुदाय की भूमिका भी बालक के चारित्रिक एवं नैतिक विकास में अहम होती है। बालक का चारित्रिक एवं नैतिक विकास हेतु यह आवश्यक है कि समुदाय का वातावरण शुद्ध, अनुशासित एवं सरल हो तभी हम बालकों में नैतिक एवं चारित्रिक विकास की कल्पना कर सकते है। समुदाय का वातावरण अगर आधारहीन एवं अनुशासनहीन हो जाए तब बालक के नैतिक गुण अनैतिकता को प्राप्त हो जाते है। इस प्रकार से अनैतिकता को दुर करने में वहाँ समुदाय ही अपनी अहम एवं अथक भूमिका में दृष्टिगोचर होता है।

6. व्यवसायिक विकास पर प्रभाव:- बालक में व्यवसायिक विकास भी अनुकरण द्वारा ही होता है। बालक देखता है कि समुदाय में रहने वाले लोग किस प्रकार के व्यवसाय से अपना जीविकोपार्जन कर सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं? आगे चलकर बालक उसी व्यवसाय को अपना लेता है जिससे वह प्रभावित हो जाता है। अत: इंगित होता है कि बालक पर समुदाय का गहरा एवं प्रेरणादायक प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी सुदुर ग्राम अंचल में यह भी देखने को मिल जाता है कि बालक कुछ ऐसे व्यवसाय को अपना लेते हैं जो समुदाय के विचारधारा एवं सोच से अलग हो। ऐसी स्थिति में समुदाय बालक को परित्याग कर दंडित करता है और उसमें सुधारात्मक उपचार हेतु तब तक नही अपनाता है जबतक कि सामुदायिक विचारधारा के अनुरुप व्यवसाय को त्याग कर दुसरा सराहनीय व्यवसाय न अपना ले। अत: समुदाय का बालकों के व्यावसायिक जीवन पर शक्तिशाली प्रभाव आवश्यक रूप से पड़ता है ।

7. राजनैतिक विचारों पर प्रभाव:- बालक जब समुदाय एवं विभिन्न सदस्यों के साथ वाद-विवाद, उठने बैठने तथा उनका भाषण सुनने से विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त होता है। बालक संसार के प्रमुख राजनीतिक पार्टिया एवं राजनितिक विचारधाराओं से बिना किताब पढ़े ही अवगत हो जाते हैं। इन्हीं विचारधाराओं में से किसी एक से प्रभावित होकर बालक उस विचार धारा का अनुयायी हो जाता है। अत: स्पस्ट है कि समुदाय बालक के राजनैतिक विकास एवं विचारों को अप्रत्क्ष रूप से प्रभावित करता है ।

8. अन्य साधनों के द्वारा प्रभाव:- बालकों में सर्वागींण विकास हेतु समुदाय विभिन्न अनौपचारिक साधनों का व्यवस्था करता है। उन साधनों में रेडियों, सिनेमा, नाट्यशाला, अभिनय केन्द्रों, अजायबघर, चित्रशाला तथा पत्र-पत्रिकाओं एवं वाचनालयों इत्यादि की व्यवस्था कर समुदाय का हमेशा प्रयास होता है कि वह इन साधनों की सहायता से विभिन्न समस्याओं से अवगत होकर उसपर विजय प्राप्ति हेतु ज्ञान की प्राप्ति करें तथा उसके समाधान हेतु विशेष कौशलों एवं ढंगो में दक्ष हो। इस प्रकार से हम पाते हैं कि बालकों पर समुदायों के अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता है।

समुदाय के शैक्षिक कार्य:-

समुदाय बालकों की शिक्षा को औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनो प्रकार से प्रभावित करता है। अत: यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि समुदाय बालकों की शिक्षा व्यवस्था में बढ़-चढ़ कर अपना अथक एवं अहम योग नही देता है। समुदाय के निम्नलिखित मुख्य शैक्षिक कार्य जो बालकों की शिक्षा को औपचारिक रूप से प्रभावित करते है:-

1. स्कूलों की स्थापना करना:- समुदाय अपने सांस्कृतिक अस्तित्व को अमरता प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार के विद्यालयों का स्थापना करता है। फलत: समुदाय की संस्कृति विकसित होने के साथ-साथ भावी पीढ़ीयों के बालक-बालिकाओं में हस्तांतरित होता है। बहुत से ऐसे समुदाय दृष्टिगोचर होते है जो अपने निजी संप्रदायिक स्कूलो की स्थापना करते हैं, जहाँ उनके अपने संप्रदाय विशेष के बालक-बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण करते हैं। अत: हम कह सकते है कि समुदाय बालक-बालिकाओं के प्रति कल्याणकारी कदम उठाने से पीछे नहीं हटते।

2. शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण तथा शिक्षा पर नियंत्रण:- वास्तव में समुदाय ही शिक्षा के उद्देश्य का निर्माता होता है। अत: उस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु समुदाय द्वारा स्थापित विभिन्न विद्यालयों में प्रदान की जाने वाली

शिक्षा पर भी नियंत्रण रखने का कार्य करता है।

3. सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्थाः- समुदाय शिक्षा के विभिन्न स्तरों को सुनिश्चित करता है तथा साथ ही सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था भी करता है।

4. पाठयक्रम का निर्माणः- शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति में पाठयक्रम अपना अहम् भूमिका निभाता है । अतः समुदाय शिक्षा संगठन की रुपरेखा तैयार करने के साथ-साथ आधारभूत पाठयक्रम का निर्माण भी करता है।

5. औद्योगिक एवं व्यवसायिक शिक्षा की व्यवस्थाः- व्यावसायिक एवं औद्योगिक शिक्षा वर्तमान युग का मॉग है। अतः समुदाय विभिन्न प्रकार के व्यवसायिक, औद्योगिक तथा तकनीकी विद्यालयों का निर्माण करता है।

6. प्रौढ़ शिक्षाः- वास्तव में समुदाय की प्रगति बालक-बालिकाओं की शिक्षा पर निर्भर होता है। परन्तु इससे भी अधिक जरुरी हो जाता है कि उन प्रोढ़ों को शिक्षित करना जिनके कंधों पर समुदाय की विभिन्न आवश्यकताओं तथा समस्याओं को हल करने की जिम्मेदारियाँ है। अतः समुदाय के लिए प्रशंसनीय होगा कि वह प्रौढ़ों की शिक्षा व्यवस्था के साथ-साथ दिव्यांगों के लिए भी शिक्षा का उचित प्रबंध करें ।

7. स्कूलों के लिए धन की व्यवस्थाः- किसी शैक्षिक संस्थानों का सुचारु रूप से चलना व्यय हेतु धन पर आश्रित होता है। अतः शिक्षण संस्थानों के लिए भवनों का निर्माण, फर्नीचर तथा शिक्षकों के लिए वेतन आदि हेतु अधिकाधिक धन की आवश्यकता महसूस की जाती है जिसके लिए समुदाय धन का उचित प्रबंध भी करता है।

8. नागरिकों तथा स्कूलों के नेताओं में सहयोगः- विद्यालयों की प्रगति हेतु स्कूल के नेताओं तथा आम नागरिकों की सहायता आवश्यक होता है। अतः शैक्षिक विकास हेतु समुदाय केवल संस्थानों को आर्थिक मदद देकर उस पर नियंत्रण ही नही रखता वरण आम नागरिकों एवं स्कूलों के नेताओं के बीच सहयोग की भावना भी स्थापित करता है।

अतः उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट होता है कि समुदाय द्वारा शिक्षा का प्रबंध व नियंत्रण भी एक पर्याप्त सीमा तक होता है। समुदाय अपने दृष्टिकोण को नई पीढ़ियों में हस्तांतरण हेतु अनेकानेक उपाय करता है और विद्यालय प्रक्रिया को सुचारु रुप से संचालित रखने हेतु ध न की व्यवस्था भी करता है। अतः हम कह सकते हैं कि समुदाय शिक्षा का एक सशक्त अनौपचारिक साधन है।

निष्कर्षः

समुदाय के उपर्युक्त प्रभावों एवं अन्य कार्यो का विद्यालयी बालकों पर कुछ सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं । जैसे- विद्यालयी बालकों को समुदाय द्वारा मानवों की सेवा, बड़ों का आदर एवं सम्मान करना, सही एवं अच्छे कार्यो के लिए संगठित होना, महिलाओं एवं बालकों को सुरक्षा के साथ सम्मान प्रदान करना आदि अनुकरणीय माना जा सकता है जबकि कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखे जा सकते हैं, जैसे- जाति, धर्म, भाषा, संप्रदाय आदि के आधार पर संघर्ष करना यह सब बालको पर नकारात्मक प्रभाव डालते है । अतः उपर्युक्त नकारात्मक प्रभावों को परिवर्तित कर मानवीय हितों को ध्यान में रखकर कार्य करना बालकों को जिम्मेदार नागरिक एवं देश को विकसित करने में सक्षम, सफल एवं अथक भूमिका अदा करने में यह आलेख एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीं :

1. पाठक, पी.डी., एवं मंगल के.पी., उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षा के आधार एवं विकास, अग्रवाल पब्लिकेशन, ज्योति ब्लॉक संजय प्लेस आगरा-2, पृ0 300-307.
2. स्वरुप सक्सेना, एन.आर. एवं पाण्डेय के.पी., शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आर. लाल बुक डिपो पब्लिकेशन, मेरठ, पृष्ठ सं0 77-87.
3. आनंद नवनीत एवं अख्तर शमीम, समाजशास्त्र, स्पेक्ट्रम बुक्स प्राइवेट लिमिटेड पब्लिकेशन, जनकपुरी, नई दिल्ली, पृ0 सं0 33-38.
4. गोविन्दा आर.आर. रश्मि (2003), कम्यूनिटी पाटिसिपेशन एण्ड एंपावरमेंट इन प्राईमरी एजुकेशन, सेज पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. मिनाई जुबेर (2008), पार्टिसिपेटरी कम्यूनिटी वर्क, कॉसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, न्यू दिल्ली।
6. डी.बी.राव, दी स्कूल एण्ड कम्युनिटी रिलेशन (2004), डिस्कवरी पब्लिषिंग हाउस प्रा0लि0, नई दिल्ली।
7. जायंट ए0 कार्ल (1979), कम्युनिटी पार्टिसिपेशन इन एजुकेशन आल्यन एण्ड बैकॉन, यू0 एस0 ए0।

❖❖❖